अविद्या बंदि किया, जीअ सभेई फास में,
भुली निज सरूप खों, सन्से मंझि पिया,
तिरिषिना जे दरियाह में, सामी वही विया,
अहिड़ा अंधा थिया, जो जागी डिसनि कीनकी.

अविद्या के प्रभाव का वर्णन करते हुए सामी जी कहते हैं, 'संसार के सभी जीवों को अविद्या ने अपने फाँस में फँसा लिया है। परिणाम स्वरूप संसार के जीव भ्रम में पड़कर अपने निज-स्वरूप को, आत्म-स्वरूप को भुला बैठे हैं। सभी मनुष्य तृष्णा/इच्छा रूपी दरिया (नदी) के प्रवाह में बह गये हैं। जगत् के जीव अविद्या के कारण इतने अंधे हो गये हैं कि वे मन की आँखें खोलकर परमात्म के स्वरूप को देख नहीं पाते।

आत्म-स्वरूप के ऊपर आवरण/परदा डाल कर उसे ढँक देने वाली शक्ति का नाम 'माया' है। इस परदे का नाम है अविद्या या अज्ञान । इसके कारण जीवात्मा (मनुष्य) सही अर्थ में 'ब्रह्म' होते हुए भी उसे अपने वास्तविक/यथार्थ स्वरूप का ज्ञान नहीं होता। परिणामस्वरूप वह स्वयं को ब्रह्म/परमात्मा से अलग समझने लगता है। साथ ही वह अपनी देह (शरीर) को ही सत्य और सबकुछ समझने लगता है। अविद्या माया का ही रूप होने के कारण उसमें सत्य को ढाँकने की शक्ति विद्यमान होती है। मनुष्य में विपरीत मति उत्पन्न करना अविद्या का काम है। यह उल्टी समझ उत्पन्न करके संसार के सुख और उन सुखों के साथ मनुष्य में 'मैं' भाव को जन्म देती है। वह मनुष्य को भ्रमों में डाल देती है। फलस्वरूप मनुष्य इच्छाओं, कामनाओं, अभिलाषाओं के प्रवाह में बहने लगता है। अविद्या की शक्ति से सत्य ढँका ही रहता है। कुछ-का-कुछ मिथ्या होता हुआ भी उसे सत्य दिखाई नहीं पड़ता। सांसारिक पदार्थों में मिथ्या सुख रूप का अनुभव कराने वाली यही माया होती है। वह मनुष्य को सांसारिक सुखों की ओर खींचती है। इसी अविद्या अथवा माया को कबीर जैसे संतों ने 'महाठगिनी' कहा है। इसी माया या अविद्या को 'डायन' की उपमा दी है, जिसने संसार में द्वैत का भाव जाग्रत कर जीव को भुलावे में डाल दिया है। सारा संसार उसके बंधनों में बँध गया है. अविद्या ने मानो जीवों को अंधा बना डाला है। परिणामस्वरूप हम अपने भीतर विराजमान परमात्मा को, अपने निज स्वरूप को देख नहीं पाते।

■